मानव मूत्र से चूहों में दांत बनाए

दांतों की समस्या से पीड़ित हैं, तो यह नुस्खा आज़माइए - कुछ चूहों और स्वयं अपने मूत्र की मदद से। स्वमूत्र चिकित्सा का इससे अच्छा उदाहरण मिलना मुश्किल है।

दरअसल, चाइनीज़ एकेडमी ऑफ साइन्सेज़ के दुआनकिंग पाई और उनके साथियों ने मानव मूत्र से स्टेम कोशिकाएं हासिल कीं और उनकी मदद से चूहे के गुर्दे में दांत उगाने में सफलता प्राप्त की। मूत्र से प्राप्त स्टेम कोशिकाओं को पहले दांतों की एपिथीलियल कोशिकाओं में तबदील किया गया और इनमें चूहे के संयोजी ऊतक मिलाए गए। दो दिन तक एक तश्तरी में पनपने का मौका देने के बाद इन्हें चूहे के गुर्दे की बाहरी परत के अंदर प्रत्यारोपित कर दिया गया। मानव स्टेम कोशिकाएं एनेमल में विकसित हो गईं और दांत का शेष हिस्सा चूहों की कोशिकाओं से बन गया।

पाई को यकीन है कि वे जल्दी ही मानव स्टेम कोशिकाओं और संयोजी ऊतक लेकर भी दांत का निर्माण कर पाएंगे। जहां यह शोध कार्य काफी उम्मीदें जगाता है, वहीं एक बड़ी समस्या से निपटना आसान नहीं होने वाला है। अभी वैज्ञानिक यह नहीं जानते कि अलग-अलग आकार और आकृति के दांतों के निर्माण का नियंत्रण कैसे होता है। यह तो सब जानते हैं कि दाढ़ और आगे के कुतरने वाले दांत काफी अलग-अलग होते हैं मगर हम यह भलीभांति नहीं समझते हैं कि दांतों के विकास में इसका नियंत्रण किस तरह होता है।

पाई इससे सहमत होते हुए भी मानते हैं कि कुदरती ढंग से बने हुए दांत मिलें तो बहुत अच्छा होगा। अभी उनके द्वारा बनाए गए दांत काफी मुलायम भी हैं। उन्हें लगता है कि इसका कारण यह है कि इन दांतों का उपयोग नहीं हो रहा है।

अन्य शोधकर्ता मानते हैं कि यदि पाई के प्रयोगों से सचमुच के दांत न बनें तो भी यह काम महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इससे हमें दांतों के विकास को समझने में मदद मिलेगी और अन्य अंगों के पुनर्निर्माण के क्षेत्र में भी लाभ होगा। वैसे भी दांतों का उपयोग शारीरिक विकास को समझने में कई दशकों से किया जा रहा है।

सवाल यह उठता है कि आखिर उन्होंने पेशाब का उपयोग ही क्यों किया। पाई का जवाब है, यही सबसे सुविधाजनक स्रोत है। ***(स्रोत फीचर्स)***